देश प्रदेश की लोक कथाएँ

भाग-2

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर म.प्र.

देश-प्रदेश की लोक कथाएँ

(भाग-2)

कोड नं.	:	001 (II)
लेखक	:	नियति सप्रे
संपादन	:	तारा जायसवाल
चित्रांकन	:	दीपक मालवी
संस्करण	:	प्रथम, मार्च 2008
प्रतियाँ	:	1000
मूल्य	:	रुपये 10.00

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा
भारतीय ग्रामीण महिला संघ,
महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इंदौर-452010, म.प्र.
फोन- 2551917, 2574104 फैक्स- 0731-2551573
e-mail: srcmpindore@gmail.com
literacy@sify.com
Web: www.srcindore.org

मुद्रक : सिद्धार्थ ऑफसेट

आमुख

साक्षरता अभियान एवं सतत शिक्षा कार्यक्रम के फलस्वरूप नवसाक्षर पठन-पाठन की ओर प्रवृत्त हुए हैं। इन नवसाक्षरों के सतत अभ्यास के लिए रोचक एवं मनोरंजक सामग्री का निर्माण हमारे केन्द्र द्वारा निरन्तर किया जा रहा है। कथाओं की तरफ नवसाक्षरों का रूझान स्वाभाविक है। इससे उनका मनोरंजन होता है। साथ ही साक्षरता कौशल का विकास भी होता है।

देश प्रदेश की लोककथाएँ भाग-1 पुस्तिका नैतिक मूल्य की कथाओं का संग्रह है। इसकी लेखिका **श्रीमती नियति सप्रे** एवं **डॉ. मीनाक्षी शर्मा** हैं। पुस्तिका हेतु आकर्षक चित्रांकन **श्री दीपक मालवीय** द्वारा किया गया है। संसाधन केन्द्र इनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है। आशा है, ये कथाएँ नवसाक्षरों को मनोरंजक लगेंगी। आपकी प्रतिक्रियाओं एवं अमूल्य सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

कुन्दा सुपेकर
निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र,
प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र.

मौत को धोखा

एक मूर्ति बनाने वाला था। वह मौत से बहुत डरता था। वह हमेशा मौत को धोखा देने के उपाय ही सोचता रहता था। उसे मौत से बचने की एक तरकीब सूझी। उसने सोचा कि मैं इतनी अच्छी मूर्तियाँ बनाऊँगा कि मूर्ति और असली व्यक्ति में कोई फर्क ही

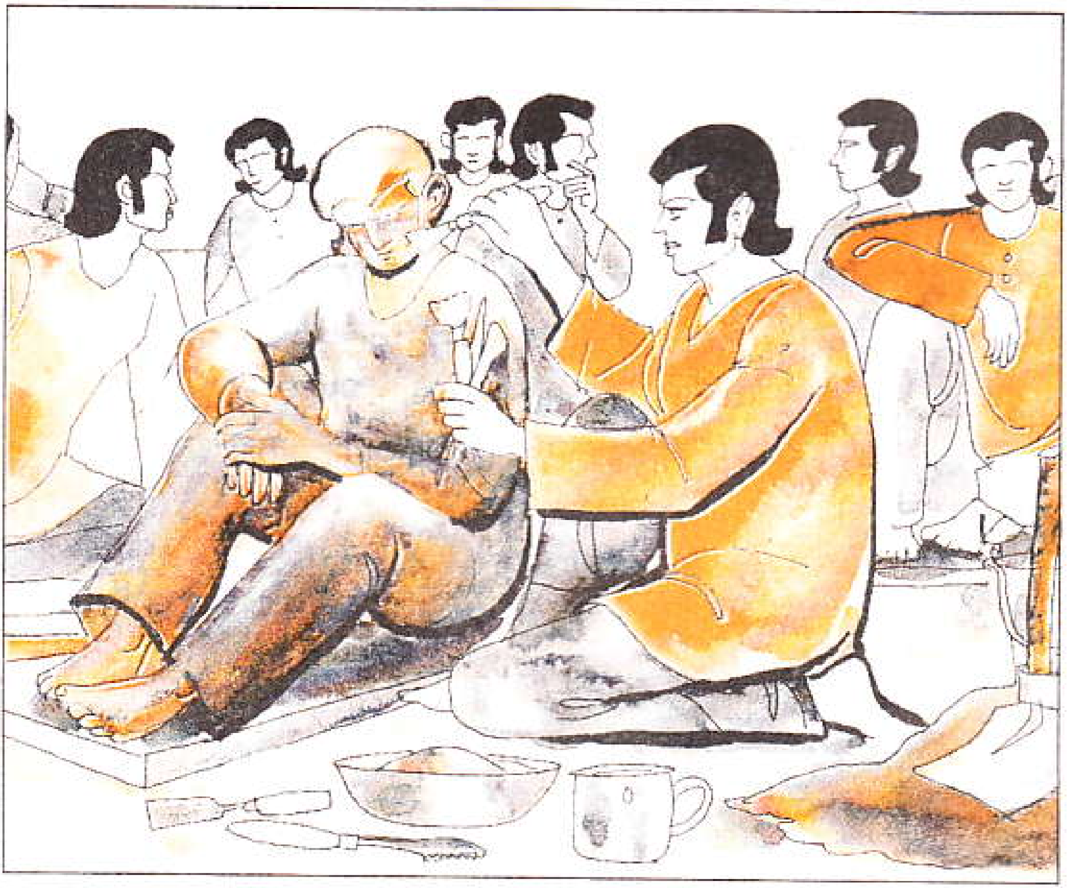

नहीं दिखेगा। वह मूर्तिकार दिनभर मेहनत करने लगा। सचमुच वह अच्छी मूर्तियां बनाने लगा। लोगों को असली व्यक्ति और उसकी मूर्ति में कोई अंतर नहीं दिखता था।

एक दिन उसने खुद की कई मूर्तियाँ बनाने का विचार किया। कड़ी मेहनत के बाद उसने खुद की नौ मूर्तियाँ बना लीं। मूर्तियाँ इतनी सजीव बनीं कि मूर्तिकार व मूर्ति में अंतर ही नहीं दिखता था। कई साल बीत गए। यमराज ने अपने दूत को आज्ञा दी कि जाओ– 'उस मूर्तिकार को लेकर आओ।'

यमराज का दूत मूर्तिकार के घर आया। वहाँ एक जैसी शक्ल

के दस लोगों को देखकर वह हैरान हो गया। उसे समझ में ही नहीं आया कि इनमें असली मूर्तिकार कौन है। वह वापस यमराज के पास लौट गया।

यमराज ने दूत की समस्या सुनी। बोले- 'अरे इसमें घबराने की क्या बात है?' मैं तुम्हें इंसान की कमजोरी के बारे में बताता हूँ। तुम फिर से उस मूर्तिकार के पास जाना। अबकि बार तुम पहले उसकी मूर्तियों की तारीफ करना। उसके बाद कहना कि इसे बनाने में एक भूल हो गई।

इंसान अपनी प्रशंसा सुनकर खुश हो जाएगा, लेकिन भूल की बात सुनकर उसका चेहरा बिगड़ जाएगा। तुम असली मूर्तिकार को पहचान लेना। इंसान अपनी गलती की बात सुनकर तिलमिला जाता है। यही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है।

यमदूत वापस उस मूर्तिकार के पास गया। उसने वैसा ही किया जैसा यमराज ने बताया था। यमराज का कहना सच निकला। जैसे ही यमदूत ने 'मूर्ति में कमी रह गई है' कहा मूर्तिकार नाराज हो

गया। मौत ने असली मूर्तिकार को पहचान लिया। 9 मूर्तियां खड़ी रहीं दसवीं मूर्ति यानि मूर्तिकार वहीं लुढ़क गया। ▣

क्रोध चाण्डाल होता है

एक पंडितजी उपदेश दे रहे थे। 'क्रोध आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन है। क्रोध आदमी की बुद्धि नष्ट कर देता है। जब मनुष्य में बुद्धि नहीं रहती तो वह पशु बन जाता है।' सभी लोग बहुत ध्यान से सुन रहे थे। पंडितजी आगे कह रहे थे- 'क्रोध चाण्डाल होता है। उससे हमेशा बचकर रहना चाहिए।'

वहाँ एक जमादार भी बैठा था। वह भक्तिभाव से प्रवचन सुन रहा था। पंडितजी जब जाने लगे तो वह जमादार नमस्कार करने के लिए उठा। पीछे से भीड़ ने धक्का दिया तो वह पंडितजी पर जा गिरा। पंडितजी का पारा चढ़ गया। 'दुष्ट तू कहाँ से आ टपका? मैं भोजन करने जा रहा था। तूने छूकर मुझे गंदा कर दिया। अब मुझे स्नान करना पड़ेगा।'

उन्होंने जमादार को खूब भला-बुरा कहा और नदी की तरफ जाने लगे। उन्होंने देखा कि वह जमादार उनके आगे-आगे चल रहा है। पंडितजी ने फिर कड़ककर पूछा- 'तू कहां जा रहा है?'

उसने जवाब दिया- 'नदी में नहाने। अभी आपने कहा था न

कि क्रोध चाण्डाल होता है। मैं उस चाण्डाल को छू गया। इसलिए मुझे नहाना पड़ेगा।'

उसकी बात सुनकर पंडितजी लज्जित हो गए। आगे से वे जो कहते थे, वही करने लगे। ▣

महात्मा का चमत्कार

किसी नगर में एक दुकानदार था। वह बहुत ईमानदार था। उसका व्यवहार भी सभी के साथ अच्छा था। ग्राहकों का वह बहुत आदर करता था। उसकी दुकान भी खूब चलती थी।

अचानक उस दुकानदार पर एक विपत्ति आ गई। उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई। घर में बच्चे को सम्हालने वाला कोई नहीं था। इसलिए उसे अपने छोटे बेटे को दुकान पर लाना पड़ता था। जो भी खरीददार आता उसका बेटा ग्राहक की टोपी, पगड़ी उतारकर फेंक देता।

कोई टोपी नहीं पहनता था तो उसके जूते-चप्पल फेंक देता था। दुकानदार ने उसे बहुत समझाया। डराया-धमकाया, मारा-पीटा, लेकिन उसने अपनी आदत नहीं छोड़ी। धीरे-धीरे लोगों ने उसकी दुकान पर आना कम कर दिया।

दुकानदार परेशान हो गया। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? तभी किसी ने बताया कि गांव में एक महात्मा आए हैं। वे बहुत ज्ञानी हैं। दुकानदार ने सोचा कि उन महात्मा से ही सलाह लेना चाहिए। वह महात्मा के पास पहुंचा। उसने अपनी समस्या महात्मा को बतलाई। सारी बात सुनकर वे बोले- 'मैं तुम्हारे लड़के को ठीक कर दूँगा, लेकिन एक शर्त है।'

दुकानदार ने पूछा-'क्या?'

वे बोले 'मैं या तुम्हारा बालक जो करे, उसमें रोक-टोक मत करना।' दुकानदार राजी हो गया।

अगले दिन महात्मा अपने सिर पर साफा बाँधकर दुकान में आए। लड़का तो मानो तैयार ही बैठा था। तुरंत उठा और उनका साफा सड़क पर फेंक दिया।

महात्मा ने हंसकर कहा- 'शाबास बेटे। अब जरा दौड़कर जाओ और साफा उठाकर लाओ।'

लड़के ने छलांग लगाई। साफा उठाकर ले आया। महात्मा ने कहा- 'मेरे सिर पर इसे बाँध दो।' लड़के ने उल्टा-सीधा साफा उनको बांध दिया।

दूसरे दिन महात्मा फिर दुकान पर आए। उनके सिर पर साफा था। उन्होंने दुकान के बाहर एक लकड़ी का टुकड़ा और कुल्हाड़ी रख दी और उस लड़के से कहा- 'बेटा, कुल्हाड़ी से लकड़ी के टुकड़े तो कर देना।' दुकानदार ने सुना तो घबराया। पर उसने कुछ न बोलने का वचन दिया था। इसलिए वह चुप रहा।

लड़के ने कूदकर कुल्हाड़ी उठाई और लड़की काटने लगा। थोड़ी देर बाद थककर लौट आया और महात्मा के पास बैठ गया। महात्मा ने सात दिन तक उससे कुछ न कुछ काम करवाया। उसके बाद बच्चे की साफा, पगड़ी और टोपी उतारने की आदत एकदम छूट गई।

दुकानदार चकित हो गया। उसने महात्मा से कहा- 'आपने क्या चमत्कार कर दिया?'

महात्मा बोले- 'हम लोग दिनभर बच्चों को कहते हैं- यह मत कर, वह मत कर। लेकिन एक बार यह नहीं कहते कि यह कर। बच्चे कुछ करना चाहते हैं। तुमने देखा, मैंने जब भी तुम्हारे लड़के को काम बताया, उसने खुशी-खुशी वह काम किया।' दुकानदार को अपनी गलती समझ में आ गई। ▣

आलस का नतीजा बुरा

एक गाँव में मोहन नाम का आदमी रहता था। वह बहुत भला था। मिलनसार था। उसमें एक ही बुराई थी, वह बहुत आलसी था। हर काम को टालता रहता था। अपनी इस आदत के कारण वह खुद भी परेशान था। वह यह मानता था कि सब कुछ भाग्य से होता है। वह अपने हाथ-पैर नहीं हिलाता था।

एक दिन एक साधु उसके घर आया। मोहन ने साधु का खूब आदर-सत्कार किया।

साधु ने खुश होकर जाते समय मोहन से कहा- 'मैं तुम्हारे बर्ताव से बहुत खुश हुआ हूँ। मैं तुम्हें एक पारस पत्थर देता हूँ। सात दिन बाद मैं आऊँगा और इसे ले जाऊँगा। इस बीच तुम जितना सोना बनाना चाहो बना लेना।'

मोहन ने पारस पत्थर ले लिया। साधु के जाने के 1-2 दिन बाद मोहन ने घर में लोहा ढूंढा। थोड़ा-बहुत लोहा मिला उसको सोना बना लिया। सोना बेचकर सामान खरीद लाया। अगले दिन पत्नी के बहुत जिद करने पर वह लोहा खरीदने गया। लोहा बहुत

महंगा था। मोहन घर लौट आया। 2–3 दिन फिर बाजार गया। वहाँ पता चला कि लोहा तो अब पहले से भी महँगा है। मोहन को खरीदने में आलस भी आ रहा था।

उसने सोचा 'एकाध दिन में भाव जरूर नीचे आ जाएगा, तभी खरीदेंगे।' घर आकर मोहन आराम करने लगा। पत्नी कुछ कहती तो कहता 'देखो, मैं कहता था न भाग्य ही सब कुछ है। अब मेरे भाग्य में घर बैठे धनवान बनना लिखा था तो मैं बन जाऊंगा। तुम फिकर मत करो।'

लोहा सस्ता नहीं हुआ और दिन निकलते गए। आठवें दिन साधु आया और उसने अपना पारस पत्थर माँगा। मोहन ने कहा– 'महाराज, मेरा तो सारा समय यूँ ही निकल गया। मैं तो सोना नहीं बना पाया। आप कृपा करके इस पत्थर को कुछ दिन और मेरे पास छोड़ दीजिए।' लेकिन साधु राजी नहीं हुआ। साधु ने कहा– 'तुम्हारे जैसा आलसी आदमी जीवन में कुछ नहीं कर सकता है। काम करते रहने से भाग्य साथ देता है। भाग्य के भरोसे बैठे रहने से कुछ नहीं होता।' साधु चला गया। मोहन पछताने लगा। पर अब क्या हो सकता था? समय निकल चुका था।

▣

धीरज का महत्व

एक बार एक साधु कहीं जा रहे थे। उनका शिष्य उनके साथ था। रास्ते में साधु को प्यास लगी। वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए। शिष्य को पानी लाने के लिए कहा। पास में ही एक नाला बह रहा था। शिष्य वहां गया, लेकिन थोड़ी देर में खाली हाथ लौट आया।

साधु ने उससे पूछा- 'पानी क्यों नहीं लाए'

उसने जवाब दिया 'गुरुजी उस नाले से अभी-अभी कई गाड़ियाँ निकली हैं। पानी गंदा हो गया। मैं नदी से पानी लेकर आता हूँ।' नदी वहां से दूर थी।

साधु ने कहा- 'नहीं, पानी नाले से ही लाओ' शिष्य फिर नाले के पास गया। पानी अभी भी गंदा था। वह फिर लौट आया और साधु से बोला- 'पानी अभी भी गंदा है। नदी दूर है तो क्या हुआ मैं अभी दौड़कर पानी ले आता हूँ।'

'नहीं, नहीं पानी उस नाले से ही लेकर आओ।' साधु ने कहा। शिष्य फिर नाले के पास गया। इस बार नाले का पानी साफ हो गया था। कीचड़ नीचे बैठ गया था। पत्तियाँ इधर-उधर हो गई थीं। पानी एकदम साफ था। वह पानी घड़े में भरकर ले आया। साधु ने कहा- 'देखा धीरज और शांति का फल। आदमी के लिए धीरज और शांति बहुत आवश्यक है। बिना उसके मन को निर्मलता नहीं मिलती।'

पंडित जी महाराज

एक थे पंडितजी। उनके पास थी ढेर सारी पोथी-पत्री। गाँव भर के लोग उनके पास आते। शुभ कामों का मुर्हूत पूछते। अच्छा मुर्हूत जानकर शादी आदि करते। जब भी कोई आता पंडितजी चश्मा लगाते, पंचाग निकालते, पोथी-पंचाग देखते। तब शुभ मुर्हूत बताते।

एक रात की बात है। पंडितजी के घर चोर घुसे। आहट हुई। पंडिताइन ने धीरे से पंडितजी से कहा- 'लगता है कोई है।'

पंडितजी बोले- 'कौन होगा इतनी रात में?'

पंडिताइन ने कहा- 'चोर लगते हैं।'

पंडितजी उठकर बैठ गए- 'क्या कहा चोर।'

पंडिताइन बोली- 'हाँ। आप कहें तो मैं शोर मचाऊं। लोग आ जाएंगे। चोर भाग जाएंगे।'

पंडितजी- 'नहीं-नहीं भागवान। ऐसी भूल मत करना।'

पंडितताइन- 'क्यों?'

पंडितजी- 'हम पंडित हैं। सारे गाँव को मुर्हूत बताते हैं। मुर्हूत

देखकर शोर मचाएंगे।'

पंडिताइन– 'मुर्हूत देखेंगे। तब तो चोर सारा माल लेकर चल देंगे।'

पंडितजी– 'और बिना मुर्हूत चिल्लाने से उल्टा हो गया तो? कुछ भी हो सकता है। चोर हमें मार सकते हैं।'

पंडिताइन– 'ठीक है। देखो मूर्हूत।'

पंडितजी पोथी लेकर दिए के पास जाते हैं। चश्मा लगाते हैं। पोथी पलटकर मुर्हूत देखते हैं।

पंडिताइन को चैन नहीं– पूछती हैं– 'क्योंजी मुर्हूत है या नहीं?'

पंडितजी– 'चुप मुर्हूत कोई नून-मिरची है कि जब चाहे ले आए। 4 दिन बाद का मुर्हूत निकला है।'

पंडिताइन– '4 दिन बाद?'

पंडितजी– 'हाँ 4 दिन बाद का मुर्हूत है। अभी चुपचाप सो जाओ। 4 दिन बाद शोर मचाएंगे। पंडितजी तो सो गए। पंडिताइन बेचैनी से चुप पड़ी रही। चोर भी सब देख सुन रहे थे। उन्होंने आराम से सब सामान समेटा। उठाकर चले गए।'

चार दिन बाद पंडितजी बोले– 'पंडिताइन आज बड़ा ही शुभ

मुर्हूत है शोर मचाने का। आज रात ग्यारह बजकर दस मिनट पर हम खूब शोर मचाएंगे। चोरों को सबक सिखाएंगे।'

दोनों रात होने की राह देखने लगे। रात का खाना निपटा। ग्यारह बजी। पंडितजी ने घड़ी देखी- 'ग्यारह बजकर नौ मिनट हुए हैं। बस एक मिनट बाद हम शोर मचाएंगे।'

दोनों घड़ी देखते रहे। ग्यारह बजकर दस मिनट पर दोनों शोर

मचाने लगे। 'गाँव वालों, जल्दी आओ। चोर-चोर...। बचाओ...। बचाओ...।'

गाँव वाले दौड़े आए। मगर वहाँ पंडित-पंडिताइन के अलावा कोई नहीं था।

'कहाँ है चोर? एक ने पूछा।'

'यहाँ तो कोई नहीं...।' दूसरा बोला।

पंडितजी बोले- 'अरे भई, चोर तो 4 दिन पहले आए थे।'

एक ने पूछा- 'तो अब क्यों चिल्लाए। तब चिल्लाना था। पंडितजी महाराज।'

पंडितजी- 'कैसे मूरख हो भाई। चोर आते ही मैंने पोथी-पत्री निकाली। मुर्हूत देखा। मगर मुर्हूत आज का था। सो हमने आज शोर मचाया।'

वह व्यक्ति हाथ जोड़कर बोला- 'सचमुच पंडितजी महाराज। हम ही मूरख हैं। हमें भी मुर्हूत दिखवाकर आपको बचाने आना था। सब हंस पड़े।'

■

हमारे प्रकाशन

श्रेष्ठ कौन	7.00
रोटी का सवाल	7.00
मन का चोर	9.00
कजरी	8.00
रोबोट	8.00
अकेली	10.00
मजबूरी	10.00
पूतों वाली	9.50
तीसरा बेटा	8.00
घड़ाभर अकल	9.50
महात्मा गांधी भाग-1	8.00
महात्मा गांधी भाग-2	8.00
सूझबूझ	8.00
कठौती में गंगा	8.00
सच्ची प्रार्थना	8.00
हीरों का हार	8.00
अकल की दुकान	8.00
बूझो तो जाने	8.00
सहोदरा	9.00
सच्ची तीर्थ यात्रा	10.00
चिंगारी	8.00
दो कुओं की कहानी	9.00
कहावतों की कहानियाँ	8.00
छत्तीसगढ़ की लोककथाएं-1	9.00
छत्तीसगढ़ की लोककथाएं-2	9.00
संत कबीरदास व संत सिंगाजी	9.00
संत रविदास	8.00
मीराबाई	8.00
गोस्वामी तुलसीदास	8.00
नया जन्म	8.00
सच्चा न्याय	8.00
सूरदास	9.00
गुरू नानकदेव	10.00
लाले का उस्ताद	8.00
झूठ की सजा	8.00
गौतम बुद्ध	9.00
महावीर स्वामी	9.00
ईसा मसीह	9.00
वाणी का कमाल	8.00
मंगू का सपना	8.00
मानव धर्म	9.00
सुनो कहानी	8.50
सुनहरा नेवला	7.00
गावँ की लड़की	9.00
कैलाश नानी	9.00
जैसी करनी वैसी भरनी	9.00
बीरबल की चतुराई	8.00
कमजोरी का स्वयंवर	9.00
निमाड़ी लोककथाएँ	9.00
नैतिक कथाएँ भाग-1	8.50
नैतिक कथाएँ भाग-2	8.00

प्रकाशक

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा

भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर, म.प्र.

महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इन्दौर-452 010 (म.प्र.)

फोन 2551917, 2574104 फैक्स 0731-2551573

मुद्रक - सिद्धार्थ ऑफसेट, इन्दौर- 9 फोन - 0731-2493745